प्रातःक्लास 8-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है।

ओमशान्ति। बेहद का बाप बेहद के बच्चों को समझाते हैं। बेहद का बाप है निराकार। वह जरूर शरीर लेकर ही समझा सकते हैं। शरीर बिगर तो कोई काम हो न सके। बाप कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूं। परन्तु ज्ञान कैसे सुनाऊं। जरूर हमकोरथ चाहिए ना। कल्प 2 इस में आकर बच्चों को समझाता हूं। बच्चे मुझे इस शरीर काआधार लेना पड़ता है। शरीर बिगर तो बात हो ही नहीं सकती। यह भी बच्चे समझते हैं हम आत्माओं का निवास स्थान बहुत दूर है। सूर्य-चांद से भी उस पार है। यह सूर्य-चांद तो इस नाटक-शाला कोरोशनी पहुंचाते हैं। हम आत्मायें तो इन से भी बहुत दूर रहने वाली हैं। जहां सूर्यचांद का भी गमन नहीं। छाया नहीं। कितनी छोटी आत्माहै। राकेट आदसे भी तीखी है। लिखते हैं एरापलेन ऐसे2 बनाये हैं जो आवाज़ से भी तीखी जाती है। बाप समझाते हैं आत्मा सभी से तीखी है। इन से तीखा कोई हो न सके। एकदम पार हो जाती है। एक सेकण्ड में कहां से कहां पहुंच जाती है। बच्चों को अपने घर का रास्ता भी बाप ने बताया है। तुम आत्माओं को यहज्ञान परमात्मा बाप दे रहे हैं। इसको कहा जाता है अध्यात्मिक। आत्माओं को ही आकर बाप ज्ञान देते हैं। आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। भक्ति भी आत्मा करती है, पढ़ती भी आत्मा है शरीर के इन आरगन्स द्वारा। बाप बच्चों को समझाते हैं एक तो तुम अपन को आत्मा समझो। और यह सभी भाई-भाई हैं। आत्मायें सभी भाई2हैं ना। बाप आकर आत्माओं को पढ़ाते हैं। यह है बेहद का बाप। समझाते हैं जितना तुमको हद का बाप प्यार करते हैं या सुख देने का चिन्तन करते हैं। उन से हम तुम बच्चों को बहुत पालना करता हूं। इसलिए ही तुम बुलाते हो बाबा आओ आकर शान्ति धाम, सुखधाम में ले जाओ। पहले हम शान्तिधाम के निवासी हैं फिर सुखधाम में आते हैं। अभी हम पुराने राज्य में हैं। रावण के पराये राज्य में हैं। ऐसा दूसरा कोई मनुष्य नहीं समझते। कोई चढ़ाई नहीं करते हैं परन्तु उनका रावण-राज्य स्थापन होता है। रावण राज्य गाते भी हैं। रावण को दुश्मन भी कहते हैं। समझते हैं रावण राज्य से रामराज्य अच्छा है। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। रामराज्य में अथाह सुख है। वहां सभी तो नहीं होंगे। यह भी समझना चाहिए ना। बच्चों की बुधि में झाड़ का ज्ञान भी है समझाया है, चक्र का भी समझाया है। बच्चे जानते हैं जब हम सतयुग में रहते थे तो और सभी आत्मायें शान्तिधाम में रहते थे। कोई को भीदुःख का नाम नहीं रहता। तुमको वहां शान्ति भी है तो सुख भी है। और बाकी वह सभी ब्रहमाण्ड में रहते हैं। ब्रहमाण्ड को विश्व नहीं कहा जाता है। हरेक अक्षर का भी अर्थ समझने का है। कोई को बहुत धन होता है तो मनुष्य कहते हैं इनको माया का नशा है। वास्तव में धन को माया नहीं कहा जाता है। माया 5विकारों को कहा जाता है। धन को सम्पति कहा जाता है। ऐसे नहीं कहेंगे इनको माया का घमण्ड है। विकारों को विकार का घमण्ड थोड़े ही होता है। मनुष्य अक्षर जो काम में लाते हैं वहरांग। यहसभी बातें बाप बैठ कर समझाते हैं। बेहद का बाप आकर तुमको कितनी सम्पति देते हैं। इसमें आर्शीबाद आद की बात नहीं। पढ़ाई में आर्शीबाद थोड़े ही किसको मिलती है। तुम जानते हो पढ़ाई से हम अपने ऊपर आर्शीबाद करते हैं। ऐसे नहीं कि टीचर से घड़ी2आर्शीबाद या कृपा मांगते हैं। बाप कहते हैं यह भक्ति-मार्ग की बातें हैं। यहां तो पढ़ाई है। बाप आकर पढ़ाते हैं। किसको पढ़ाते हैं? आत्माओं को। आत्मा को आत्मा का ज्ञान भी देते हैं। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है आत्मा क्या चीज़ है। इतने सभी ढेर आत्मायें हैं सभी का अपना2 पार्ट है। हर एक को पार्ट अपना2 अविनाशी और अनादी मिला हुआ है। यह भी अच्छी रीत समझना है। तुम बेहद के एक्टर्स हो। और अविनाशी एक्टर्स हो। वह होते हैं हद के एक्टर्स। तुम्हारी बुधि में सारे विश्व के चक्र काज्ञान बिठाया जाता है। आत्मा ही धारण करती है। शरीर तो खत्म हो जाता है। आत्मा अविनाशी है उसमें सारा पार्ट है। तुम यह सभी नई बातें नये(बाप)से सुनते हो। गीता में तो है कृष्णभगवानुवाचः। तुम यहां नई बात सुनते हो। निराकार परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागरशिव बाबा से सुनते हो। यह है भगवानुवाच न किकृष्ण भगवानुवाच। यह ही

बहुत भारी भूल है* जो भारतवासियों ने अपने शास्त्र को आपे ही खण्डन कर दिया है। आपे ही चमाट लगाई है। और नीचे गिरे हैं। तुम बच्चे समझते हो यह बड़ी ते बड़ी भूल है। जो सर्व शास्त्रों का मां बाप है उनको झूठा बना दिया है। तो और सभी भी झूठे हो गये। यहभी बाप समझाते हैं वर्सा क्रियटर से मिलता है, ~~क्रिय~~ ~~क्रियश्र~~ क्रियशन से नहीं। लौकिक बाप भी क्रियटर है तो बच्चों को वर्सा मिलता है। लौकिक बाप का वर्सा बच्चा लेता है। बच्ची तो दूसरे घर चली जाती है। यहां बेहद का बाप कहते हैं तुम सभी आत्माओं को हम से वर्सा लेने का हक है। यहां बच्चे वा बच्ची का सवाल नहीं। तुम सभी आत्माएं हो। बाप से पढ़ते हो। जो जितना पढ़ेंगे उसी अनुसार भविष्य पद मिलेगा। इसलिए अभी बाप कहते हैं एक तो अपने को आत्मा समझो यह पक्का2 निश्चय करो। तुम घड़ी2 देह-अभिमान में आ जाते हो। पहला2 सबक है यह आत्म-अभिमानी बनने का। मैं आत्मा शान्त-स्वस्थ हूं। हमारा स्वधर्म ही है शान्त। शान्ति कोई जंगल में नहीं मिलती है। शान्ति तो हमारा स्वधर्म है। यहां तुम आये हो हो पार्ट बजाने लिए। शान्तिधाम में बैठने लिए थोड़े ही आये हो। यह पार्ट बजाने की जगह है। यहां तुम शान्ति में रह न सको। यह है ही पार्ट बजाने की जगह। बाकी यहरावण राज्य है इसलिए यहां दुःख है। वहां रामराज्य होने कारण सुख होता है। शान्ति भी रहती है। यहां दुःख अशान्ति है। क्या तुम शान्ति इस जन्म में मांगते हो या जन्म-जन्मान्तर के लिए चाहिए। वह तो शान्तिधाम में मिल सकती है। वास्तव में शान्ति मांगना ही बेकायदे है। सतयुग में सुख और शान्ति दोनो ही मिलती है। बाप ने समझाया है निवृति-मार्ग वाले सन्यासी लोगसुख और शान्ति दोनो दे न सके। यह तो बेहद के बाप से ही वर्सा मिलता है। पवित्रता तो जरूर है। वह भी बाप के सिवाय मनुष्य मनुष्य को दे न सके। पवित्रता को सदगति कहा जाता है। पवित्र बनने से तुम चले जावेंगे सदगति में। यहां है कलियुग पतित दुनिया। पतित दुनिया पतित मनुष्य ही रहते हैं। पतित दुनिया में पावन कोई हो न सके। पावन दुनिया ही दूसरी है। पतित दुनिया ही अलग है। स्वर्ग है पावन दुनिया, नर्क है पतित दुनिया। पतित दुनिया में एक भी पावन नहीं, पावन दुनिया में एक भी पतित हो न सके। यह सभी बातें बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। बाकी आटे में लूण रह जाता है। नहीं तो फीकालगेगा ना। यहज्ञान कोई फीका नहीं। भक्ति भी है मीठा। ज्ञानभी मीठा है। भक्ति देखो कितनी मीठी लगती है मनुष्यों को। भक्ति का नशा चढ़ता है तो बस भक्ति ही भक्ति करने लग पड़ते। एकदम मस्त हो जाते हैं। बहुत मोह रखते हैं उस में। भक्त-माल भी बनती है ना। जो बहुत भक्त बनते हैं उन में अच्छे गुण होते हैं। एक होती है ~~भक्त~~ भक्ति, दूसरी होती है ठगती। रिलीजैस माईन्डेड भक्तों को कहा जाता है। अभी पहले2 तुम आत्मा के धर्म में जाते हो। आत्मा का धर्म है शान्त। निवास-स्थान हैघर मूलवतन। सन्यासी तो घर पहुंच न सके। उन्हों का ~~धर्म~~ धर्म ही अलग है निवृति मार्ग का। यह ज्ञान तो दोनो के लिए है। बाप कहते हैं उन निवृति मार्ग वालों का भी ड्रामा में नूंध है। मैं ने तो प्रवृति मार्ग स्थापन किया। फिर तो अनेक किसम2 के धर्म निकले हैं। अनेकानेक मत-मतान्तर हैं। इसलिए ज्ञान का शुट ही सारा मुंझ गया है। कोई समझा न सके। दिन प्रति दिन मुंझते ही जाते हैं। मनुष्य मत तो है ही फिर मानव मत और क्या बताते हैं। कितने मठ-मठान्तर हैं। बाप तो एक ही बात समझाते हैं। यह खेल ~~कैसे~~ कैसा वन्डरफुल है। इस सृष्टि चक्र की आयु 5000 वर्ष है। सृष्टि भी पहलेनई फिर पुरानी होती है। तो उनकी आयु भी जरूर होनी चाहिए ना। उनकी आयु का किसको भी पता नहीं। नई सो पुरानी, पुरानी सो नई होती है। नये में क्या होती है पुराने में क्या होती है। ऐसी2 खयालातें कोई भी मनुष्य की बुधि में नहीं हैं। भल भक्त लोग वेद-शास्त्र आद पढ़ते हैं। भक्ति का बहुत2 मान था। आधा कल्प भक्ति चलती है। ~~कितने~~ कितने मनुष्य दान-पूण्य आद करते हैं। कितने ढेर शास्त्र हैं। सभी शास्त्रों को उठा कर परिक्रमा देते हैं। चित्रों भी उठाते हैं और फिर शास्त्रों को भी उठाते हैं। उनकी भी महिमा करते हैं। ~~ग्रा~~ गाड़ी में बिठाकर मनुष्य हांकते हैं। अभी खयाल

करो मनुष्य बड़े या शास्त्र बड़े? जैसे मनुष्य बैल बन जाते हैं। और शास्त्रों कोउठाकर सामान चढ़ा करपरिक्रमा देते हैं।उनकी इज्जत खाते हैं।यहहुई भक्ति की ईज्जत।भक्ति भी आधा कल्प चलती है।यह फिर है ज्ञान की ईज्जत।भक्ति को ईज्जत तुम समझ गये हो।भक्ति में नीचे उतरते कला कम होती गई है।उतरती कलामाना दुर्गति।यह बातें मनुष्य नहीं समझते। उनको तो अपने ही मत-मतान्तर में नशा चढ़ा हुआ है।शास्त्रों का तो कितना नशा रहता है।शास्त्रार्थ करते2कहां लड़ भी पड़ते हैं। यहां लड़ाई आद की तो बात ही नहीं। तुमको तो बिलकुल शान्ति में रहना है। मुख से शिव शिव भी कहनान है।कुछ भी तकलीफ की बात नहीं।बिलकुल ही सहज है। कहा जाता है ना हम तुमको नयनों पर बिठा कर ले जाते हैं। बच्चे बहुत ही प्यारे होते हैं। तो कहते हैं तुम तो जैसे नयनों के नूर हो। बच्चों को बहुत प्यार करते हैं।बच्चे बिगर घर सूनासमझते हैं। और फिरकहते कन्या नहीं तो कन्या बिगरधन नहीं आवेगा। कन्या भी जरूर चाहिए। फिर उनकी पालना भी अच्छी करते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो पालना चाहिए बेहद के मां-बाप की। जगदम्बा की पालना।जरूर जगदम्बा आई हुई होगी जिसने पालना की जिसका फिर यादगार बना है। कलकते में काली के आगे कितनी रोड़ियां मारते हैं मां मां कहकर।और कितनी काली भयंकर है और हाथ में उनको हिंसा की चीजें दी है। उसको कहाजाता है कितनी अन्धश्रधा है। भल मां काली है परन्तु ऐसे थोड़े ही है। काली और गोरी कैसे बनती है यह तुम बच्चे अभी जानते हो। वह लोग तो अर्थ को कुछ समझते नहीं। मां मां कह रोड़ियां मारते रहते हैं क्यों कि वह तो विश्व कामलिक बनाती है ना। परन्तु किसको भी पता नहीं है। तुम काली हो विश्व के मालिक बनाने वाली।उनको मां मां कहना है राईट।परन्तु अर्थ तुम समझा सकते हो।लक्ष्मी कोई मां नहीं है।काली मां अभी है। मनुष्यों को थोड़े ही पता है वह फिर कब आवेगी। बहुत अम्बाओं के मंदिर हैं।मंदिर भी तो जरूर सभी जगह चाहिए ना। पूजा करनी होती है। अभी तुम बच्चों ने मां का अर्थ समझा है। काली बेशक है परन्तु इतनी नहीं।और न तो ऐसा कोई धंधा ही करती है। बम्बई में मम्बादेवी ठीक दिखाते हैं शान्ति में बैठी है। मां जगदम्बातो एक ही है।अनेक प्रकार के चित्र आद बना दिये हैं। अभी तुम समझते होमां तो एक ही है।तुम भी उनको मांकहेंगे। अपन को थोड़े ही मां कहेंगे।जगदम्बा एक ही है जिसके तुम औलाद हो। तो भक्ति और ज्ञान में रात-दिन का फर्क है। जो बाप बैठ समझाते हैं। और कोई जानते ही नहीं।मनुष्यों को कब ज्ञान सागर नहीं कहा जा सकता। सन्यासियों को भी आलमाईटी नहीं कहा जा सकता।भल शास्त्रों के अथॉर्टी है। बहुत वेद-शास्त्र आद पढ़ने वाले को उसकी अथार्टी कहते हैं। बाप कहते हैं वह यह सभी पढ़े हैं तब अथार्टी बने हैं। मैं तो इन सभी के पढ़े बिगर ही अथार्टी हूं। मैं इन सभी को जानता हूं। यह भक्ति मार्ग की साम्रग्री है। जैसे झाड़ की शोभा होती है वैसे भक्ति की भी शोभा होती है। इसलिए इनको दुबण के रूप में दिखाते हैं। दुबण के बाहर में शोभा बहुत होती है।जैसे चांदी सूर्य पर बहुत चमकता है।उनको दुबण कहते हैं।तो भक्ति करते2 इनमा अनुसारगले तक उस दुबण में फंस जाते हैं।शुरूसे लेकर भक्ति करते2 अन्दर घुसते2गले तक आ जाते हैं तब मैं आता हूं निकालने लिए। सभी को आकर भक्ति-मार्ग के दुबण से निकालताहूं। भक्ति की भूमिकाएं भी रखी है।कोई चर्या बन जाता है तोकहते हैं यह सातवां भूमिका में है। इनको शरीर का कुछ भीपतानहीं पड़ता।टटी भी खाते रहेंगे। बाबा तो अनुभवी है ना। साधु देखता था झट भागता था। उस समय समझते थे यह तो सातवीं भूमिका में है।हाथ जोड़ते थे। इसको कहाजाता है भक्ति दुर्गति। अभी पता पड़ता है। अभी तुम बच्चों को ज्ञान की ताकत मिल जाती है। जितना2 तुम याद में रहेंगे सतोप्रधान बनते जावेंगे। गाते भी हैं भारत की पहले2एवरेज आयु 150वर्ष थी। पवित्र थे। अभी तो एवरेज आयु 30-35 वर्ष है।भारत की ही आयु बताते हैं। भारत की कितनी बड़ी आयु थी। योगी पवित्र होते हैं ना।वह योग सीखते हैं परन्तु वह तो विकार में जाते हैं। सन्यासी फिर ब्रह्म-तत्व

केसाथ योग लगाते हैं। वह है ब्रहम तत्व। जैसे यहां मनुष्य रहते है वहां आत्माएं रहती हैं। वह तोब्रहम ज्ञानी तत्वज्ञानी हैं। कहते हैं हम ब्रहम में लीन होजावें। फिर अविनाशी ड्रामातो हुआ नहीं। यहसभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। बाप को ही राईट कहा जाता है। बाकी सभी अनराईटियस। अभी बाप तुमको राईटियस बनाते हैं। इस समय तुमको निश्चय होता है बरोबर हमकोवह पढ़ाते है। इनकी आत्मा भी सुनती रहती है। पढ़ाने वाला वह है। प्रजापिता ब्रहमा तो जरूर चाहिए जब कि प्रजापिता है तो इतनी सारी प्रजा कैसे पैदा होती होंगी। ब्रहमा को कोई स्त्री नहीं दिखाते हैं। शंकर को पार्वती दे दी है। ब्रहमा की स्त्री कबसुना है क्या। उनके तो सभी बच्चे ही ठहरे। ब्रहमा द्वारा बाप यहरचना रचते हैं। भक्ति मार्ग शंकर को पार्वती दे दी है जिसको कथासुनाते हैं कैलाश पर्वत पर। फिर उनका तीर्थ बनाया है. कितनी झूठी बातें हैं। कहते हैं अमरनाथ पूर्णमासी पर शिव का लिंग आपे ही बन जाता है। अभी फिरआपे ही कैसे बन सकता है। यह सभी बपोड़ हैं। बाबा जब ज्ञान में आया शिव बाबा की प्रवेशता हुई तो फिर खयाल हुआ जाकरदेखें। ज्ञान कानशा तो था मैं विश्व का मालिक हूं। बाबा था ना इस में। तो उस दिन टोपी आद पहन कर जैसे कि एक बड़ा आफिसर बन गया। साथ में बच्चे आद भी थे। घोड़े पर गया। (हिस्ट्री सुनाना) फिर बन्दर खाया। कितनी झूठ है। अमरनाथ की यात्रा की इस तन द्वारा। तो इसको कहा जाता है मुडिडयों की पूजा। लतसंग मां। फिर इस पर गीत भी बनाया था।

बंगाली लोग मछलीबिगर चल न सके। आगे चल कर यहसभी आवेंगे। फिर एक दो को देख देखकर छोड़ देंगे। फिर भी काली मां के पुजारी है। काली मां कौन थी गौरी मां कौन थी। यह बैठ तुम उनको समझाओ। काली मां विश्व की बादशाही देती है। गौरी मां से विनाशी धन लेते हैं ऐसे तुम बैठ समझाओ तो बंगाली लोग भी आ जावेंगे। यह बहुत ही छी2 दुनिया है। यह भी तुम जानते हो। दुनिया नहीं जानती। मनुष्य तो बिलकुल अज्ञान अंधियारे में है। भक्ति का पाम्प है। घोर अंधियारा है। ऐसे समयपर बाप आकरघोर-सोझरा करते हैं।सारे ड्रामा के राज़ को तुम नम्बरवारपुरुषार्थ अनुसारजानते हो। ज्ञान और भक्तिबिल्कुल अलग है।जहां ज्ञान है वहां भक्ति नहीं।जहां भक्ति है वहां ज्ञान नहीं।सतयुग तें दोनो ही नहीं होते।अभी संगम पर एक तरफ है ज्ञान दूसरी तरफ है भक्ति।रचता बाप द्वारा हीतुम रचना के आदि-मध्य-अन्तको जानते हो।बाप तो सब कुछ समझाते रहते हैं।जो समझ जाते है उनको फिरसमझाना होता है।पहले2 गरीब आवेंगे। फिर शाहूकार।फ्रिंड फिर पिछाड़ी में सन्यासी कन्या समझेंगे देखें तो सही यह कौन है।कन्याओं ने बाण मारी है ना।फिरसमझेंगे इन्हों कोजरूरकोई ईश्वर ने ज्ञान दिया होगा।जल्दी थोड़े ही समझेंगे।समझो चिनमयानन्द कोअपनाबनाते हो। कैसे कहेंगे कृष्णभगवानुवाचनहीं शिव भगवानुवाच है। सभी कहेंगे इनकोजादू लगा है।कितने अध्याय बैठ सुनाते हैं।ढेरमनुष्य जाते हैं सुनने। जबबच्चेउन से मिलते हैं और समझाते हैं कृष्ण गीता का भगवान नहीं है कृष्ण तो पुनर्जन्म में आते हैं। तो कह देते सभीएकही हैं।भगादेते हैं। तुम महावीर बनेंगे, महावीर जूतों मे जाकर बैठते थे।सुनते थे। फिर उनके ग्राहकों को पकड़ते थे। तब वह समझेंगे यह ब्रहमा कुमारियों पास जाता है। जरूर मैं से अच्छा सुख मिला है।या जादू लगा है। वहसमय आवेंगा जो कहेंगे बरोबर यहतो भगवान का ज्ञान है। न कि श्रीकृष्ण का। भगवान को सर्वव्यापी कह कितनी गाली देते हैं। बाप कहते हैं मैं जिन पर रहम करता हूं उपकार करता हूं वह फिर मुझे गालीदे अपकार करने लग पड़ते हैं। फिर मैं उन पर उपकार करता हूं। मैं कुछ भी दान-भाग ले नहीं लेताहूं। मनुष्य कब निष्कामी बन न सके। अहंकार न आये इसलिए कह देते हैं निष्कामी सेवा।फल की ईच्छा नही है। परन्तु फल तो जरूर मिलता है।फिर निष्काम सेवा तोएक ही बाप कहते हैं। तब ही बच्चों को नमस्ते करते हैं। 50000वर्ष आकर बच्चों को देखते हैं।खुशी होती है।पतित मुझे अच्छा पार्ट मिला हुआ है।सर्व की सदगति करने में कैसा पार्ट बजाता हूं सो तुम बच्चे जानते हो। ओम। बच्चों को गुडमार्निंग। नमस्ते।